6597

891.43
C 41 K

Chandra prasad

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6597

Price Rs. /2/-

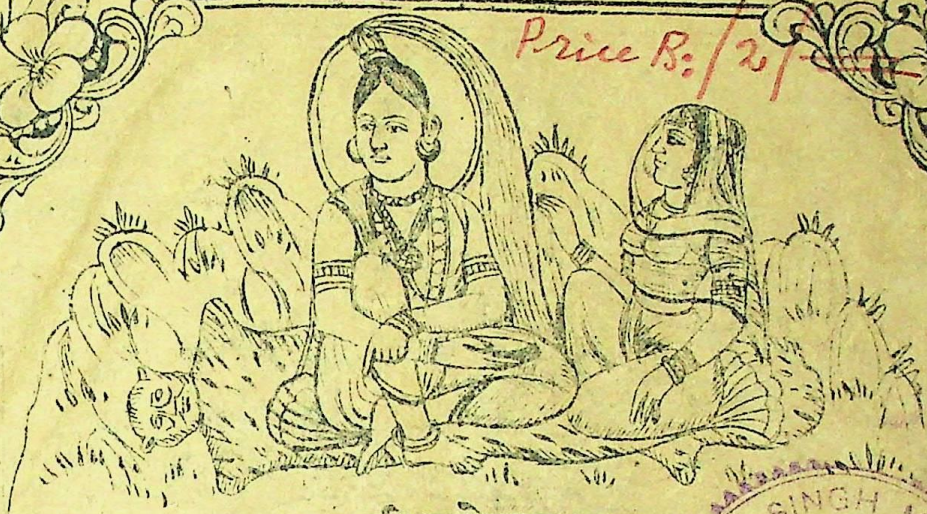

श्रीगणेशायनमः

# कालींजरमाहात्म्यभाषा

کالنجر ماہاتم بھاشا

PRATAP SINGH MUSEUM SRINAGAR 3017

जिसको

अपने देशके भाषाभिलाषियों के उपकार निमित्त दोहा सोरठा चौपाईमें संस्कृत कालींजर माहात्म्य से अर्थात् पद्य में श्री नीलकण्ठ महादेव कीकृपासे लाला चन्दीप्रसाद मुदर्रिस तहसीली मऊ साकिन मौज़ा माटा परगना पैलानी ज़िलाबाँदा ने भाषामें

अनुवाद किया

और मतबअ़ मुन्शी नवलकिशोर

स्थान लखनऊ में

सन् १८८१ ईसवी व संवत् १९३८ विक्रमाब्द में

छापा गया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

# विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जुलाई सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| भाषा (इतिहास) | ४-विराट पर्व्व | १-बालकाण्ड | काव्य |
| महाभारत | ५-उद्योग पर्व्व | २-अयोध्याकाण्ड | जगद्विनोद |
| १-पहिले हिस्सा में शा | ६-भीष्म पर्व्व | ३-आरण्यकाण्ड | भक्तमाल |
| दि पर्व्व, सभापर्व्व, बन | ७-द्रोण पर्व्व | ४-किष्किन्धाकांड | सूर सागर |
| पर्व्व, | ८-कर्ण पर्व्व | ५-सुन्दरकाण्ड | कृष्णसागर |
| २-दूसरे हिस्सा में विरा | ९-शल्य व गदापर्व्व | ६-लङ्काकाण्ड | विश्रामसागर |
| टपर्व्व, उद्योग पर्व्व, भी | सौप्तिक पर्व्व मय यो | ७-उत्तरकाण्ड | प्रेमसागर |
| ष्मपर्व्व द्रोणपर्व्व, | शिक व स्त्री पर्व्व | रामायण शब्दार्थको | व्रजविलासबड़ावली |
| ३-तीसरे हिस्सा में क | १०-शांतिपर्व्व राज | रामायण का इतिहास | कृष्णप्रिया |
| र्णपर्व्व शल्य पर्व्व ग | धर्म्म आपद् धर्म्म | रामायण मानस दीपि | विजयमुक्तावली |
| दापर्व्व सौप्तिक पर्व्व | व मोक्षधर्म्म व दान | रामायण कवितावली | अनेकार्थ |
| योशिक पर्व्व विशोक | धर्म्म | रामायण गीतावली | छन्दोर्णव पिङ्गल |
| पर्व्व स्त्री पर्व्व शांति प | ११-अश्वमेधआश्र | रामायण गीतावलीमें | कविकुलकल्पतरु |
| र्व्वमें राजधर्म्म आपद | म वासक मुशल पर्व्व | विनयपत्रिका मो | रसराज |
| धर्म्म मोक्षधर्म्म | महाप्रस्थान स्वर्गा | विनयपत्रिका बा शि | सतसई मूल |
| ४-चौथे हिस्सा में शा | रोहण | सभाविलास | सतसई सटीक |
| न्तिपर्व्व दान धर्म्म अश्व | १२-हरिवंश | नाटक | तुलसी शब्दार्थ |
| मेध आश्रम वासिक | रामायण रामविलास | प्रबोध चन्द्रोदय | भजनावली |
| पर्व्व व मौसल पर्व्व व | रामायण तुलसीकृत | रामाभिषेक | प्रेमरत्न |
| वाण प्रस्थान स्वर्गा | रामायण सटीक मय | आनन्दरघुनन्दन | युगलविलास |
| रोहण पर्व्व हरिवंशपर्व | मानसदीपिका कोष आदि | वेदान्त | चित्रचन्द्रिका |
| महाभारत पर्व्व अलग | तथा जिल्द बंधी | योगवाशिष्ठ | बारह मासा बलदेवप्र |
| हुआ भी है | तथा मोटे अक्षरों की | आनन्दामृत वर्षिणी | मनोहरलहरी |
| १-आदि पर्व्व | मय तसवीर वक्षेपक | नानार्थ नौ संग्रहा | गंगालहरी |
| २-सभा पर्व्व | रामायण तुलसीकृत | वली | यमुनालहरी |
| ३ बनपर्व्व | सातों काण्ड | ब्रह्मसार | शृंगारबत्तीसी |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

RANBIR LIBRARY
No.
JAMMOO

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

# अथ श्री कालिंजर माहात्म्य भाषा ॥

सो० चरण कमल शिर नाय प्रथमहिं सिंधुर बदन के।
ममकृत भणित सुहाय जाकी कृपा कटाक्ष से ॥
दो० मोमें बुधि कछु है नहीं मूरुख हौं मति मन्द ।
सिद्धिसदन शिवसुतसुमिरि करौं कथा सुख कन्द ॥
कुं० श्रीलंबोदर गजबदन तुव चरणनमें ध्यान ।
मोअनाथ के नाथ तुम हरहु मोह अज्ञान ॥
हरहु मोह अज्ञान भक्ति रघुबर की दीजै ।
परेउं जगत भ्रमकूपपकरि करसे गहि लीजै ॥
कहत चन्द्रिका लाल ज्ञान भरत्यों मम ओदर ।
यांचत हौं करजोरि देव बर श्री लंबोदर ॥
संकट बिघन हरण गण राजा । लंबोदर तन तेज बिराजा ॥
अमित प्रभाव अनेकन नामा । सुर अनादि प्रभु पूरण कामा ॥
पाणि जोरि यांचौं अब स्वामी । द्रवहु दयाकर मूषक गामी ॥
ह्वै प्रसन्न दीजै बर दाना । कालिंजर यश करौं बखाना ॥
अंजनि पुत्र महाबल बीरा । रघु पति सेवक तनय समीरा ॥
संकट मोचन नाम तुम्हारा । सुर कारज कर यश बिस्तारा ॥
अक्षय कुमार दशानन बेटा । हत्यो ताहि तुम एक चपेटा ॥
कालनेमि अहिरावण मार्‍यो । श्री रघुनंदन काज सुधार्‍यो ॥
दो० मारुत नन्दन बीरबर भक्ति राजमति धीर ।
चरण कमल सुमिरण करौं नाशौ तनकी पीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० जनपर होहु दयाल जैजैजै हनुमान प्रभु ।
बिनय चन्द्रिका लाल अभिलाषा पूरण करौ ॥

दो० पुनिबन्दौं शारद चरण नाय कमल पदशीश ।
जाकीमहिमाअमितहैकहि नहिंसकतफणीश ॥

जै जै देवि सरस्वती माता । महिमा अमित लोक बिख्याता ॥
आदि शक्ति जग जननि भवानी । तूलीला नहिं जाय बखानी ॥
मातु कृपा तव जापर होई । मन बांछित फल पावत सोई ॥
जब जब सुरन पर्‍यो अति गाढ़ा । तब तब मातु विपतिते काढ़ा ॥
सुर कारज नाना बिधि कीन्हा । केकय सुता फेरि मति दीन्हा ॥
होहु मातु मोपर अनुकूला । कथा करो मुद मंगल मूला ॥
निजबुधिबलमोहिंनहिंबिश्वासा । मातु हृदयमें करहु प्रकासा ॥
छन्द बिबेक न जानों कोई । किहि विधि कथा करौं पुनिसोई ॥

दो० चरणजलजजगजननिके बिनवों अति अनुराग ।
जिनके सुमिरण करतही उदय होत बड़ भाग ॥

सो० मम कण्ठ कर बास बिनय चन्द्रिका लाल की ।
निरमल बुद्धिप्रकाश शंकर यश बरणन करौं ॥

दो० पुनि बंदौं श्री गुरु चरण प्रेम प्रीति उरलाय ।
जिनकी कृपा कटाक्ष से राम भक्ति मिलिजाय ॥

गुरू देव देवन क देवा । तन मन धन से गुरु की सेवा ॥
गुरु हैं स्वामी अंतर यामी । जिन दासन को कीन्हों नामी ॥
श्रीगुरु चरण धरिशिर लाऊं । जाकी कृपा सकल सुख पाऊं ॥
गुरु के चरण प्रीति जिनकीन्हा । पारब्रह्म समगुरु को चीन्हा ॥
ते नर भाग्यवान जग माहीं । मुक्ति पदारथ दुर्ल्लभ नाहीं ॥
नमस्कार गुरुचरणन करहूं । जासु कृपा भवसागर तरहूं ॥
गुरु की महिमा वेद प्रकाशी । गुरु काटत हैं यमकी फांसी ॥
हुहो दयाल सो गुरू गोसाईं । भ्रम तम हरहु तरण की नाईं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० श्री गुरु चरण प्रतापते हिय उमग्यौ अनुराग।
महिमा ऊखल क्षेत्र की बरणौं सहित बिभाग॥
सो० द्विज चरणन धरिमाथ हाथजोरि अस्तुति करौं।
मैं हौं निपट अनाथ करत काव्य अतिशयडरौं॥
मोपर होहु दयाल शिशु सेवक अपनो गनौ।
कहत चंद्रिकालाल तुम समर्थ सर्व्वज्ञ हौ॥
कबि अगणित भेजे संसारा। जिन बर्णे हरि चरित अपारा॥
राम सुयश नाना बिधि बरना। जहं भ्रम तिमिर तरणि तहकरना॥
जिनको कथा बिदित जगमाहीं। पाणि जोरि बिनवौं सबपाहीं॥
आखर अर्थ छंद ब्यौहारा। भनित तुम्हार को पाय सहारा॥
तिहि अनुसार कथा यहौ कीन्हा। दूषण गनन यमनहिं नहिं चीन्हा॥
ताते सबके चरण मनाऊं। करहु कृपा ऊखल यश गाऊं॥
सबसे करौं प्रार्थना येही। भनित सुधारहु राम सनेही॥
उमा शंभु सम्बाद उदारा। गुण दूषण को करै बिचारा॥
दो० बालमीकि ब्यासादि कबि हरि यश बरणन कीन।
संस्कृत बानी बिमल राम भजन लव लीन॥
सूरदास केशव सुमिरि बिनवौं तुलसी दास।
भवसागर नर तरन को भाषा कीन प्रकास॥
सो० चरण कमल शिरनाय पाणि जोरि बिनती करौं।
तुम प्रभु होहु सहाय सुफल होहि मम भनितयह॥
प्रथमहिं संतन करौं प्रणामा। जिनके हृदय राम किय धामा॥
पुनि बंदौं बुध जन समुदाई। अवगुण भनितके देय छिपाई॥
अब बरणौं सोइ कथा रसाला। उमाशंभु सम्बाद बिशाला॥
गिरिजा पती शंभु अबिनाशी। पारबती प्रति कथा प्रकाशी॥
जग हित कारण बरण्यो शंकर। सुनतकटत सबपाप भयंकर॥
सबसुखलहत सुनतइतिहासा। अंत काल पहुंचै कैलासा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसी कथा बिचित्र सुहाई । दुख मोचन नाना सुखदाई ॥
प्रेम सहित बकता जे श्रोता । पठनश्रवनको करहिं सचेता ॥
दो० भाजन भाग्यके होतहैं तेनर यहि जग माहिं ।
कालिंजर माहात्म्यको सुनतसकल भ्रमजाहिं ॥
सो० गुरुपद पंकज शीश सुमिरि २ हिय हर्ष अति ।
जे प्रभुसम जगदीश दीन ज्ञान मेरे हिये ॥
कही उमापति शंभु बखानी । कालिंजर महिमा मृदुबानी ॥
कथा ललित सुंदर अति नीकी । पद्म पुराण पताल खण्डकी ॥
जोयह कथा सुनै मन लाई । शिव पूजन पुनिकर हरषाई ॥
ऐसे प्राणी जे संसारा । दरशन ते फल अधिक बिचारा ॥
कालिंजर परबत जे चढ़ईं । तीरथ सकलके दरशन करईं ॥
चार पदारथ मिलते वाहीं । नीलकराठ दरशन अघ जाहीं ॥
कलियुग में कालिंजर आवै । मन दुबिधा रंचक नहिं लावै ॥
पार्बती संशय नहिं यामें । गिरि कालिंजर शिवहै जगमें ॥
दो० स्वयं ब्रह्म अवतार धरि लीला कीन अपार ।
देवदनुजमिलि आपपुनि मथ्योसिंधु यकबार ॥
सो० मन्द्राचल को लाय सर्प बासुकी रजुसुभग ।
कच्छपतरे सुहाय याबिधि सागर को मथ्यो ॥
चौदह रत्न कढ़े तेहिमाहीं । तिनके नाम गिनों तुम पाहीं ॥
रमा कौस्तुभमणि अति चारू । कल्पद्रुम शशि धेनु बिचारू ॥
अमी शंख धन्वन्तरि जानौ । रम्भा धनुष गरल पहिचानौ ॥
सुरा तुरङ्ग और गजराजा । मथत कढ़े सब सहित समाजा ॥
तेरा रतन बांटि सबलीन्हा । गरल हलाहल हमको दीन्हा ॥
हर्षित पान करत मैं भयऊं । राम नाम हिय सुमिरत रहेऊं ॥
ताते गरल कण्ठ में राखा । तबते नीलकण्ठ सुरभाषा ॥
कालिंजर परबत सुखदाई । तामें रहत भयों मैं जाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० गिरिपुनीत अति सजलहै सुखदबहै बरबात।
तेहिगिरि ममचित रमरह्यो हर्षनहृदय समात॥
सो० अघ संपूरण जात तागिरि दर्शन होत ही।
होत प्रफुल्लित गात जेनर आवैं प्रेम युत॥
बसहिंसदानर वहिथलमाहीं। ऊखलतजिपुनि अंत न जाहीं॥
जेहिकर जन्म बिवाहा होई। गुरु दिक्षा लेवै पुनि कोई॥
ते नर रहत सदा निष्पापा। ब्याधि ब्यथा एकौ नहिंब्यापा॥
मृत्यु काल कालिंजर आवै। बिन संदेह मुक्ति को पाव॥
जो इच्छा नरके मन माहीं। लहत सोइ फल अचरज नाहीं॥
कछु दिन बास पुरीमें करई। नीलकंठ शिव चितमें धरई॥
बिना परिश्रम ते नर प्रानी। पावहिं सुगति सोसुनहुं भवानी॥
योजन अर्द्ध बीच बिस्तारा। तीरथ सकल बिचित्र पहारा॥
दो० पार्बती निश्चय सुनो गुप्त बताऊं तोहिं।
मनबांछितफल पावहीं जेनर जानत मोहिं॥
सो० धेनु दुहत जोकाल दूध दुहावत बीतहीं।
शंभू परम दयाल देत सुगति नर रूप तेहिं॥
जितनेसमय गऊ पलुहाई। उतने समय रहै कोउ आई॥
नीलकण्ठ दर्शन जो करई। पाणि परसि माथे में धरई॥
ब्रह्म हत्या उनकी मिटिजाई। जिनयह पातक कीन्हों भाई॥
योजन अर्द्धमें मन्दिर मेरो। गिरि कालिंजर कहतहौं टेरो॥
मुक्तिको धाम बनायो शंकर। तहं सब छूटत पाप भयंकर॥
सकल तीर्थन को फल होई। पुण्य बहुत तिनकर पुनिसोई॥
कालिंजर उत्तर दिशि माहीं। नाम त्रिबेणी तीरथ काहीं॥
कार्तिक मास करै स्नाना। बिप्रन को देवै कछु दाना॥
दो० सकल कामसिधि होतहैं करत कलिंजर बास।
जोपातक उपपात बहु होत बेगहीं नास॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० सपरै कार्तिक मास तीरथ सकल जे क्षेत्रके ।
सोनपरतभवफांस शिवदयाल जिहिपररहैं ॥
कार्तिक शुक्ल तीजजो होई । शिव सर गङ्गा सपरै कोई ॥
सरके निकट देवालय सुंदर । विष्णु महेश्वर अरु लम्बोदर ॥
श्री भगवती मारुत नंदन । तीरथ बासी पाप निकन्दन ॥
गिरिप्रदक्षिणा करै जो कोई । यज्ञ समान लहत फलसोई ॥
सरितएक गिरि पश्चिमसोहै । गोपी कुण्ड देखि मन मोहै ॥
कार्तिकशुक्लनौमितिथि जानौ । यह तीरथ माहात्म्य बखानौ ॥
करि स्नान दक्षिणा देवै । गोपेश्वर शंकर को सेवै ॥
प्रेम सहित तिनकोकर ध्याना । मन बांछित फल पावैं नाना ॥
दो० मन बांछित फल देतहैं शंकर परम उदार ।
दृढ़ बिश्वास सुमिरण करै लहैं पदारथ चार ॥
सो० गोपीकुण्ड बिशाल तेहि मज्जत सुख होत है ।
भणतचन्द्रिकालाल महिमा गोपी तीर्थकी ॥
गिरिजासुनौ सत्य मम बाणी । धराविरंचि रचीनिजपाणी ॥
तामधि गिरि कालिंजर देखो । तीरथ सकल शिरोमणि लेखो ॥
सुख प्रदकर बहुभोग बिलासा । भूमिविषे यहगिरि कैलासा ॥
स्वर्गा रोहिण कर स्नाना । ताके फल मैं कहौं बखाना ॥
सात जन्मके पातक जाहीं । कलियुगके सब रोग नशाहीं ॥
नीलकण्ठ मन्दिर तहं राजत । शंख घंट दुन्दुभि पुनिबाजत ॥
ता मन्दिर शिव मुखकी पूजा । दानी शिव सम देव न दूजा ॥
गङ्गा जल स्नान करावै । चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ावै ॥
दो० बिल्व पत्रको आदिलै धूप दीप नैवेद ।
हरषितशिवअर्प्पणकरै मिटतसकलभ्रमभेद ॥
सो० नीलकंठउरध्यान जयशिवजयशिवकहतहीं ।
होहिंमगनयहिज्ञान गलबलगालबजावहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जग में पुण्य क्षेत्र बहुतेरे। तिन में तीरथ हवें घनेरे॥
शिवको क्षेत्र मुक्तिको दाता। गिरि कालिंजरहै बिख्याता॥
चारौ युग शिव क्षेत्र बखाना। महादेव स्थित जग जाना॥
परम धाम स्थित शिव शंकर। चंद्रभाल आसीन बघंबर॥
कार्तिक शुक्ल पञ्चिमी भाई। गङ्ग पतालमें जाइ नहाई॥
सपरि ताहि परिकरमा देई। गिरि कैलास बास करतेई॥
मृगा क्षेत्रके दर्शन कीजै। मक्र प्रयाग प्राप्त फल लीजै॥
जे बक्ता श्रोता नर ज्ञानी। कहैं सुनैं यह कथा भवानी॥
दो० ताके सकल मनोरथ सिद्धि होहिं ततकाल।
बिचरतगिरि ऊखलबिषे छूटिजात भ्रमजाल॥

इति श्री पद्मपुराणे पातालखण्डे उमा महेश्वर सम्बादे
बर्णनोनाम प्रथमोध्यायः॥ १॥

---

सो० शंकर मुखके बैन पारबती सुनि हर्षिहिय।
धनिधनिराजिवनयन कह्योकथासंसारहित॥
उमा सुनत शंकर मुख बानी। बोलीगिरा प्रेम रस सानी॥
महाराज प्रभु दीनदयाला। मम इच्छा उर सुनहु कृपाला॥
अपर कथा उत्तम पर्ब्बतकी। बरणो नाथ कहौ रुचि मनकी॥
बर्णन लगे तबै वृष केतू। कथा रुचिर भवसागर सेतू॥
ऊखल गिरि महिमा सुनकोई। तीन प्रकार पाप क्षय होई॥
कायिक बाचिक मांसिककीन्हा। गिरिकालिंजर अघहरलीन्हा॥
जिहकर मृत्यु कलिंजर होई। अमरपुरी कहं जातहै सोई॥
साठहजार बरस तहं बासा। अमरपुरी महं भोग बिलासा॥
दो० ता पश्चात् जन्म पुनि उत्तम कुल में होइ।
भाग बली नर बुद्धि बर नृपति होय पुनिसोइ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० राज करै धर्म्मज्ञ शुभ चितक निशि दिन रहै ।
नीति निपुण सर्व्वज्ञ प्रजा प्राण सम जानई ॥
करत राज सुखजन्म सिराई । मृत्यु काल पहुंचै जबआई ॥
अनायास छूटत तन सोई । बाराणसी जन्म पुनि होई ॥
मुक्ति पदारथ काशी देवैं । गिरिजा प्रेम सहित जो सेवैं ॥
नव ऊखल जग रचे बिधाता । सुखप्रद सकल मोक्षके दाता ॥
तिनके नाम कहौं मैं गाई । सुनहु उमा अब तुम चितलाई ॥
रेणुक शूकर काशी जानौ । कालीक्षेत्र कलकता मानौ ॥
महाकाल उज्जैनी कहिये । कालातीर्थ बिठूर जो लहिये ॥
छोटे बड़े बटेश्वर दोऊ । नवम कलिंजर ऊखल सोऊ ॥
दो० गुह्यक चार दश जानिये तीन ग्राम पुर सात ।
मोक्ष देत ये भूमि में नव ऊखल बिख्यात ॥
सो० पुरी सात जग माहिं अयोध्या मथुरा नगर ।
जन्म लियो हरि ताहिं पांच पुरी आगे सुनौ ॥
कनखरपुरी हरिद्वारकेपासा । तेहि पुर माया नामप्रकाशा ॥
द्वारावती अवंती जानौ । कांची काशी और बखानौ ॥
पार्बती पूछ्यो जो मोहीं । सातौ पुरी गनायों तोहीं ॥
गिरिजा ये तीरथ बिख्याता । मुक्ति के कारण रचे बिधाता ॥
ग्राम तीनि में कहौं बखानी । सावधान ह्वै सुनहुं भवानी ॥
शालग्राम गंडक तट सोहत । नंद ग्राम मथुरा ढिग जोहत ॥
तीसर सम्भर बेद पुकारा । निःकलंक भगवत अवतारा ॥
दंडकारण्य सैंधव स्थाना । जंबू पुष्कर तीरथ नाना ॥
दो० उत्पाल उत्तर दिशा नीमषार जग जान ।
कुरुक्षेत्र बर्ता सहित और आरण्य स्थान ॥
सो० ये स्थान पुनीत जो कोउ ह्यां तन त्यागहीं ।
उमा सुनौ यह रीत परम धाम नर पावहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो शरीर त्यागै इनमाहीं। परमधाम बैकुण्ठ को जाहीं॥
रबिशशि उदय करहिं संसारा। जीवअमर पुरबास सुखारा॥
नौऊखल जोतुम प्रति गावा। उमा सुनौ मम अंगसुहावा॥
रेणुक कंठबीच पुनि राखा। ऊपर भृकुटी काशी भाखा॥
कालतीर्थ नासा के ऊपर। क्षेत्र नाशिका है पुनि शूकर॥
नाभि अर्द्ध कलकत्ता सोई। सदाकाल बिन्ध्या जो होई॥
ताहि चिंतवन कहत है कोई। महादेव के अंग है जोई॥
कालिंजर शिव मस्तक जानौ। नीलकण्ठ को बास बखानौ॥

दो० नीलकण्ठ यश बिमलहै सकल तीरथन माहिं।
दरशन करत अनेक फल प्राप्तहोहिं क्षणमाहिं॥

सो० लिंगपूजि जगमाहिं मम कीरति जे गावहीं।
शिवपुर को ते जाहिं सुख अनेक तहं पावहीं॥

जग शिव लिंगपूज सबकोई। गिरिकालिंजर मुखकीहोई॥
सतयुग में कीरति गढ़नामा। त्रेता महं गिरि उत्तम धामा॥
द्वापर में पिङ्गल गढ़ गायौ। कलि में नाम कलिंजर पायौ॥
रत्नजड़ित गढ़ सतयुग जानौ। त्रेता सुबरण से पहिंचानौ॥
ताम्रजड़ित गिरिद्वापर माहीं। कलियुगपाहन जड़ित दिखाहीं॥
पारबती ऊखल यह पावन। परम बिचित्र मोर मन भावन॥
कालिंजर महिमा जे गावें। नर नारिन को बांचि सुनावें॥
ते नर तजत सकल भवशोका। अंतकाल पावें मम लोका॥

दो० परम धाम मम पावहीं सुखभोगत बहु काल।
ऋद्धि सिद्धि दुर्लभ नहीं भणत चन्द्रिका लाल॥

सो० कलिनृप अघ क धाम द्वापर पाण्डव कृष्ण नृप।
त्रेता रघुकुल राम सतयुग मानधाता भये॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेउमामहेश्वरसंवादे
द्वितीयोध्यायः॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० चंद्रभाल वृष केतुके चरण कमल धरिशीश।
औ गढ़ दानी शंभुतुम कृपाकरहु जगदीश॥
सो० शङ्कर परम दयाल हेमसुता कर जोरि कह।
मोपर होहुनिहाल बिलग बिलग महिमा कहौ॥
रबिशशि क्षेत्र महातम जोई। प्रथमहिं नाथ कहौ पुनि सोई॥
तेहि पीछे पुनि तीरथ नाना। महिमा सब की कहौ बखाना॥
प्रश्न उमाकी शिव मनभाई। कृपासिंधु बोले हरषाई॥
सुनु गिरिजा तुव परम सयानी। प्रश्नसुखद जग कीन भवानी॥
जेहि सुनिनर पुनि होहिं सुखारी। कियो प्रश्नतुमप्राण पियारी॥
परस्वारथ में प्रीति तुम्हारी। रहै सदा रुचि शैल कुमारी॥
यह संसार अगम बारीशा। बूड़त सकल रंक अवनीशा॥
तेहितारण को तरणी चाहौ। अघसमूह नरनारि के दाहौ॥
दो० हेम सुता तुव नामजपि नरउतरहिं भव सेतु।
मुक्ति पदारथ पावहीं बिहंसि कह्यौ वृषकेतु॥
सो० हरषित हिय त्रिपुरारि तीरथ परबत के सकल।
बिलगबिलग कामारि गिरिजाप्रति भाषत भये॥
रवि शशि क्षेत्र महातम भारी। तिनकी महिमा कहौं पुकारी॥
सुनहुं उमा चित में धरि ध्याना। पावन फल तीरथ स्नाना॥
तीनकाल सपरहिं सरमाहीं। तिनके पाप सकल मिटिजाहीं॥
सतयुग गंगा नाम रहोहै। त्रेता नाम सरस्वती कहोहै॥
द्वापर क्षेत्र प्रभास्य बखाना। कलिमें वृद्धप तीरथ जाना॥
बूढ़ी बूढ़ा कह सब कोई। तिनकी महिमा है नहिं गोई॥
दिन संक्रांति और रबि बारा। सपरत पाप होहिं जरि छारा॥
नाना दुःख सकल मिटि जाई। बर्ष करोरों को सुख पाई॥
दो० ब्रह्मा बिष्णु महेश पुनि इन्द्र आदि सुर सर्ब।
ऋषि मुनीश नर यक्ष सब अरु किन्नर गंधर्ब॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० येसब करत बिचार दिन प्रति होतिहै कामिना।
सातै अरु रबिबार परत योग जब आइकै॥
अमित प्रभाव तीर्थको राखा। बिधि स्नान ताहि पुनि भाषा॥
दशमी शुक्ल पक्ष एतवारा। एकादशि दिन शुभग बिचारा॥
सरसौं शुक्ल बरण पुनि औरा। जटामासि लेकर यक ठौरा॥
सबको पीस लेप कर अंगा। तब सपरै रबि शशि की गंगा॥
तीन प्रकार पाप क्षय होई। या बिधि सरस परत जो कोई॥
वृद्धप क्षेत्र के तट पर जाई। सूरज दीप देय मन लाई॥
तनर जाहिं सूर्य के लोका। तन निर्मल पुनि होहिं बिशोका॥
गोहूं गुड़ गो बच्छ समेता। करहिं संकलप सूर्य्य के हेता॥
दो० यहि बिधि सूरज क्षेत्रमें नर करिहैं स्नान।
हेम रजत अरु ताम्र पुनि अन्न बसन करदान॥
सो० सोतौ निरमल होइ परम पबित्र नर जानिये।
यह बिधि सपरै कोइ करहिं कृपा सूरज तबै॥
पारबती सुनि शंकर बानी। पाणि जोरि पुनि स्तुति ठानी॥
जय महेश शंकर अबिनाशी। कीजै कृपा जानि निज दासी॥
कथा अपूरब बरण्यो नाथा। ऊखल क्षेत्र सकल गुण गाथा॥
यहमोहिं नाथ कहौ समुझाई। प्रथमहि कोसर मज्ज्यो जाई॥
जग हित कारण पूंछौं स्वामी। दीन बंधु प्रभु अंतरयामी॥
उमा प्रश्न तुम सहज सुहाई। लागि नीक मोरे मन भाई॥
क्रम कोटि एक बड़ो नरेशा। सपर लहेउ सुख कुंड दिनेशा॥
मार्कंडे मुनीश जग जाना। तीरथ महिमा कीन बखाना॥
दो० सोइतिहास पुनीत अति तुम्है कहौं समुझाय।
रुचिर महातम तीर्थको सुनत सकल भ्रमजाय॥
सो० निरमल होत शरीर ब्याधि कुष्ट तनके मिटत।
बिगत होत सब पीर मज्जत वृद्धप क्षेत्रके॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तीरथ महिमा अगम अपारा । कहि बिरंचि नहिं पावत पारा ॥
सूर्य नरायण क्षेत्र महातम । सुनत भजत अघ डरपतहै यम ॥
संपूरण धन धान्य को पावै । सूरज ध्यान जो मनमें लावै ॥
प्रजा पुत्र राज अरु भोगा । सब ऐश्वर्य लहत हैं लोगा ॥
प्रेम सहित बिधवत कर पूजा । वृद्ध क्षेत्र सम तीर्थ न दूजा ॥
तेहि मज्जन फलअति अनुरागा । होहिं हंस नर सपरत कागा ॥
मार्कण्डे मुनि नृपहि सुनावा । क्रमकोटि नृप अति सुखपावा ॥
प्रेम सहित सरमज्जेउ राजा । भयो मुदित नृपसहित समाजा ॥
दो० सपरत तीरथ राजके अघ सब गये बिलाय ।
दियोदान बहु द्विजनको सुख संपति नृपपाय ॥
सो० रबि चरणनमें ध्यान प्रात काल स्नान करि ।
उरमें उपजत ज्ञान तन निरोग ह्वै जात है ॥
मस्तक नेत्र रोग सब जाई । व्याधि व्यथा सब जाय नसाई ॥
दाद खाज अरु कोढ़ जो होई । मज्जन करत जायं सब खोई ॥
दिव्य शरीर होहिं क्षण माहीं । कहौं सत्य कछु अचरज नाहीं ॥
और बांछा मनमें जेती । सुफल होहिं सपरत सर तेती ॥
दिन कर क्षेत्र महातम भारी । तेहि दरशनफल मिलतहै चारी ॥
रबि दिन दीप देय सरतटमा । बितअनुमान करहिं कछु धरमा ॥
हरषित लेय सूर्य्यके नामा । कुशा बिछाय करै बिश्रामा ॥
पावै मुक्ति तजै जब प्राना । कीन उमा प्रति शंभु बखाना ॥
दो० वृद्ध क्षेत्र महिमा अमित बरणी शंभु सुजान ।
किमि जानै नर मूढ़ मति जिनके हृदय न ज्ञान ॥
सो० यह कलिकाल कराल भजौ उमापति शंकरहि ।
भनत चंद्रिका लाल करहिं कृपा गिरिजारमण ॥
इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेउमामहेश्वरसंबादेरबिक्षेत्र
माहात्म्यतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नमस्कार करि शिव चरण गिरिजा बोलीं बैन।
पृथक पृथक फल तीर्थको बरणौ करुणा ऐन॥
सो० धनिधनि राजिवनयन पाणि जलज युगजोरिकह।
गिरा मधुर मृदु बैन पार्बती शिव प्रति कहेउ॥
जाते संशय सब मिटि जाई। होत कथामें रुचि अधिकाई॥
परमेश्वर सर्बज्ञ सुजाना। दुरा धर्ष समरथ भगवाना॥
तीरथ फल स्नान बिधाना। पूजन दरशन को फल नाना॥
तब महेश बोले हरषाई। उमा प्रश्न तुम अति सुखदाई॥
गिरिके तीरथ सकल बताऊं। तिनके गुण नाना बिधि गाऊं॥
अगिन कोण दिशा के माहां। नाम अंगिरा तीरथ ताहीं॥
रामचन्द्र पद चिन्ह बिराजत। तेहि पूजे अघ सगरे भाजत॥
चतुर युगी प्रतिमा यक नीकी। पूजत देइं बांछा जीकी॥
दो० नारि सौमित्र बखानिये प्रतिमा जाकी आइ।
करि स्नान पूजन करै मन दुबिधा बिसराइ॥
सो० दरशन परम पुनीत रामचन्द्र पद चिन्हके।
कुछ न रहत भवभीत सुमिरत रघुनन्दन चरण॥
रामचन्द्र चरणारबिन्द के। दरशन करत जात अघ तनके॥
करि पूजन अरु ध्यान लगावै। सकल कामनाको तहं पावै॥
सुमिरै श्री रघुनन्दन चरणा। मोह जनित संशय तम हरणा॥
और मुनीश्वर ऋषिन समेता। दरशन करत होत चित चेता॥
प्राची दिश गढ़ केर बिभागा। परम बिचित्र एक पुनिजागा॥
शोभित तहां सहित निज बामा। मेढुकी भैरव कहतेहि नामा॥
प्रेम सहित उनका सपरावै। चंदन अक्षत पुष्प चढ़ावै॥
यहिबिधि उनका पूजन करही। शिवका ध्यान हृदय में धरही॥
दो० भैरव दर्शन करतहीं पाप होहिं जरखाष।
सकल सम्पदा पावहीं जेतीमन अभिलाष॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० अति पुनीत अस्थान मृग धारा तीरथ सुभग।
करै जो उनको ध्यान कर सायल तहं सप्तहैं ॥

चौ० दर्शन करत पर्ण पुनि करई । नर्कबास जेपीतर तरई ॥
सात गोत्रलौ पीतर तरते । मृग धारा श्राद्ध जे करते ॥
गया श्राद्धको फल पुनि मिलता । मृगा क्षेत्रको जो कोइपिलता ॥
देय तिलांजुलि मृग धारा में । लहत सकल सुख निजदारामें ॥
आठों सिद्धि वहां के पाहीं । देइं सद्यफल संशय नाहीं ॥
नैऋत्य कोणमृग धारा ऊपर । हनुमत्त ठाम तहां अति सुंदर ॥
प्रेम सहित तिनकी करिपूजा । प्रिय रघुनन्दन और न दूजा ॥
चार पदारथ तुरते पावैं । हर्षित पवन तनय को ध्यावैं ॥

दो० बजरङ्गी सुमिरण करै हनुमत बाहु प्रचण्ड ।
भूतप्रेत बाधा सकल काटि करैं शत खण्ड ॥

सो० उरउपजत अतिज्ञान ऋषिमतांग बापीनिरखि ।
गढ़ पश्चिम दिशिजान मज्जन करतअनेक फल॥

चौ० ऋषिबावली महातमभारी । महिमासुनुगिरिराजकुमारी॥
भाद्र मास शुक्लतिथि पांचै । करि अस्नान ध्यान राचै ॥
हरर्षित मन शिव नाम उचारै । तापत्रय तरु मूल उखारै ॥
आयुभर सुख प्रापत होई । मृत्युकाल दुख पावन सोई ॥
दूजै जन्म बहुत धन लहही । पिछले जन्म खबरि सब रहही॥
सो प्रभाव ऋषि क्षेत्र बखानौं । दूसर कारण चित्त न आनौं ॥
गढ़ बायूदिशि उत्तिम जागा । परम मनोहर अतिप्रिय लागा ॥
तहां बास मैं कीन भवानी । नीलकण्ठ मम नाम सयानी ॥

दो० चतुरानन सुर असुर सब मनुज यक्ष गंधर्ब ।
भक्ति सहित नरपूजहीं लहहिं मनोरथ सर्ब ॥

सो० शैल सुता ममधाम जे नर आवहिं दरश को ।
घरिक करैं बिश्राम अघ संपूरण जात जर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० स्वर्गारोहिणकरअस्नाना। जात सकलअघकलुखनिदाना॥
अति बिचित्र पुनि परम सुहाई। देवन को दुर्लभ यह भाई॥
भैंरव गुप्त ठाम वहि राजत। दरशन करत सकल अघभाजत॥
गुप्तमहेश बास तहं करहीं। जे नर पूजि ध्यान उर धरहीं॥
ते फल लहहिं पदारथ चारी। दानि शिरोमणि हैं त्रिपुरारी॥
ओर काल भैंरव तेहि पासा। ए सौ मित्र क्षेत्र कर बासा॥
ए पावन सौमित्र क्षेत्रमें। देखौ निज बुधि ज्ञान नेत्र में॥
सकल कामना प्रापत याहीं। मिलत सुकल सख संशय नाहीं॥
सो० भैंरो रुद्र समीप हैं किशोर भैंरो तहां।
नामबिदित सबदीप महिमा परम बिचित्रअति॥
दो० आश्व मेध फल पावहीं जे पूजहिं चितलाय।
दरश प्रभाव महेश पुर गमन करहिं हर्षाय॥
दो० प्रथक् प्रथक् तीरथ सकल बर्णे शंभु उदार।
कहत चन्द्रिका लाल पुनि भजु शिव बारम्बार॥

इतिश्री पद्म पुराणे पाताल खण्डे उमा महेश्वर सम्बादे
चतुर्थोध्यायः॥ ४॥

---

दो० पन्नग भूषण भाल शशि उर मुण्डनकी माल।
शीश जटा अरुगङ्ग पुनि शोभित शंभु कृपाल॥
सो० गिरा मधुर करि बाल पाणिजोरि अस्तुति करी।
गिरिजा सुनि तेहिकाल कथाअमी सम शंभुमुख॥
पाणि जोरि गिरिराज कुमारी। शङ्कर प्रति मृदुबचन उचारी॥
नाथकहेउ सुन्दर इतिहासा। सुनत सकल भ्रम तुरतहिं नाशा॥
उर उपजी अति प्रीति न थोरी। बिनती नाथ सुनहुं अबमोरी॥
जो सौमित्र क्षेत्र तुम भाखा। सबमें श्रेष्ठ ताहि पुनि राखा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोवृतांत मोहिं कहौ बुझाई । सुनत सकल भ्रम संशय जाई ॥
तब शिव बोले परम दयाला । नोकी प्रश्न कीन्ह तुम बाला ॥
गिरिजा सुनहुं सत्य हम काहीं । यामें संशय रञ्चक नाहीं ॥
क्षेत्र सौमित्र जेदरशन करहीं । नाना अघ तिनके सब जरहीं ॥
दो० उत्तम तीरथ सपरतहीं शीघ्रहि होहिं निहाल ।
प्राछित महि सुर बधेको छूटि जाइ ततकाल ॥
सो० भक्ति सहित धरि ध्यान क्षेत्र सौमित्र सेवनकरै ।
उर उपजावत ज्ञान शिव दयाल दानी महा ॥
अपर पाप सुनु शैल कुमारी । सब छूटत नर होहिं सुखारी ॥
नर देहीं में प्राछित कैसे । भरी भवन बारुद है जैसे ॥
छुवत कृशानुसकल उड़िजाई । तिमि गिरि दरशन पापपराई ॥
रहित बरूद भवन पुनि जोहा । तैसे निर्मल तन पुनि सोहा ॥
जे यह क्षेत्र में मज्जन करहीं । दृढ़ बिश्वास हृदय में धरहीं ॥
राजसूय मखको फल पावहिं । अंतकाल शिवलोक सिधावहिं ॥
थल रमणीक एक गिरि माहीं । बिन पूंछे बर्णो तुम पाहीं ॥
उत्तर दिशि पर्बत में सोहै । शय्या राम निरखि मन मोहै ॥
दो० जनक सुता अस्थान तहं शोभा बरणि न जाइ ॥
रघुनन्दन की सेज को उपमा नहीं लखाइ ॥
सो० सीता कुण्ड सुहाय तिहि समीप प्राची दिशा ॥
शीघ्रहि पाप बिलाय मज्जन पानके करतही ॥
रामचन्द्र पूजा चित धरहीं । भव बारिधि नर तुरतै तरहीं ॥
जेनर सीता राम को पूजत । भव बाधा उनकी सब छूटत ॥
इहां करै बहु भोग बिलासा । अन्त काल बैकुंठ में बासा ॥
विष्णु लोक नाना सुख पावहिं । जेनर भक्ति पूर्ब्बक ध्यावहिं ॥
सीताकुण्ड जे मज्जन करहीं । सकल पाप प्रभु तिनके हरहीं ॥
अंतकाल गवनहिंसुरलोका । करहिं निवास बिगत सबशोका

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सीता कुण्ड ते रञ्चक दूरी। गङ्ग पताल विराजत रूरी॥
नाम बान गङ्गा तेहि कहहीं। मज्जन करत सकलअघ दहहीं॥
दो० गङ्ग पतालके निकटही कछुक दूर अस्थान।
प्रतिमा पाण्डव सुतनकी छठों नरायण जान॥
सो० परम मनोहर ठाम सुरसरि प्राची दिशि बिषे।
राजत उत्तम धाम कुण्ड सजल पुनि तहं बिषे॥
तिनके दरशन परम पुनीता। करतहिं सकल मिटत भवभीता॥
कुण्डतहां पुनि रुचिर सुहावा। सलिलबिमल जिनमाथ लगावा॥
अथवा मज्जहिं अति अनुरागा। सुर सिहाहिं लखितिनके भागा॥
कृष्ण आर्पण करत जे दाना। करिकै ध्यान विष्णु भगवाना॥
पांचौ पंडु सहित नारायण। पूजत तिनको होहिं परायण॥
प्रेम सहित होम तहं करहीं। अंतकाल कैलास सिधरहीं॥
यह तीरथ दुर्लभ देवनको। मृत्युलोक सुलभ लोगनको॥
दरशन करहिं और अस्नाना। लहति सुगति फलकहौं बखाना॥
दो० उमा सुनौ गिरि मध्यमें सर पुनीत यक सोह।
कोटितीर्थ तेहि नाम पुनि हरत सकल भ्रममोह॥
सो० प्रेम सहित जेलोग कोटितीर्थ मज्जन करहिं।
लहहिं सकल सुखभोग ब्रह्मलोक में होहिं नृप॥
उत्तम सकल तीर्थन माहीं। देखि सकल अघ ओघ नशाहीं॥
तीरथ उदक अक्ष जो लावैं। ते कैलास बास पुनि पावैं॥
जोफल सकल तीर्थन माहीं। मिलत सकल कछुसंशय नाहीं॥
पुण्यरूप यहथल पहिचानौ। सपरत कोटि गऊ फल जानौ॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष तिथि राका। चंद्रबार परिजाय अचाका॥
रिक्ष कृत्तिका पुनि जोहोई। ऐसे योग में सपरत जोई॥
ते नरके छूटत सब पापा। बिन संदेह मिटत संतापा॥
हैनहिं तीरथ अस जगमाहीं। कीरति सुनत सकलभ्रमजाहीं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कोटितीर्थ महिमाअमित तीनरात्रि करबास ।
जेनर मज्जन करतहैं पाप होत सब नास ॥
सो० सुंदर परम पुनीत उमासुनौ इतिहास यक ।
अघ लाग्यौ जेहिरीति बाराणसी नरेशको ॥
राजा काशी केर सुजाना । सकल महीपन में परवाना ॥
शङ्कर भक्त कर्म मन बानी । तेहि नृपकी सुंदरि अति रानी ॥
मंदालसा नाम तेहि बाला । शुभ लक्षण अरुरूप बिशाला ॥
अति प्रिय वह भूपतिको रानी । कन्या तासु रूप गुण खानी ॥
उमासुनौ यक अचरज भयऊ । रात्रीसमय नृपति गृहगयऊ ॥
तिमिर बहुत मंदिरके माहीं । कन्या सूततरह पुनि ताहीं ॥
नृप धोखा मम भामिनि सोई । प्राण पियारीहै तियजोई ॥
भ्रम बश कुचकर परस्यो भूपा । कन्याको नहिं चीन्ह्यो रूपा ॥
दो० कर परसत जागी सुता अति भयकम्पित गात ।
गुणकेशी बोली बचन भइ अनहोनी बात ॥
सो० मैतनया तुव तात मात मोरि मंदालसा ।
बचन बज्रसम घात सुनत लगे महिपालके ॥
अति संताप बिकल नरनाहू । भयो शोक अतिदारुण दाहू ॥
बड़ प्रायश्चित मोहीं लागा । मो समान जग कौन अभागा ॥
हृदय बिचार करत नृप भयऊ । तुरत भवनते बाहिर गयऊ ॥
निशिदिन शोचमगन महिपाला । भ्रमवशपातक कियोकराला ॥
अबयौं कौन लोकको जैहौं । कहां सुगति गति अपनी पैहौं ॥
नाम सुतीक्षण पण्डित जोई । बोलवायहु नृप तिनका सोई ॥
शास्त्र बिषयतिनको बहु ज्ञाना । तिनसो नृप वृत्तांत बखाना ॥
भ्रम बश महा पापमें कीन्हा । कर कुचगह्यों न कन्या चीन्हा ॥
दो० भवन अंधेरेमें परी कन्या सूतति सोय ।
रैनसमय धोखाभयो धीरज चित्तनहोय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० धोखेको महराज किमिपातक यहमिटहि सब ॥
द्विजबर होहु जहाज बूड़त शोक समुद्र महं ॥
दीन बचन राजाजब भाष्यो । द्विजके चरणशीश निज राष्यो ॥
तब पण्डित बोले मृदुबानी । सुनु महीप जनि करसि गलानी ॥
सहज उपाय बताऊं तोहीं । अस तीरथ लखि परतहै मोहीं ॥
बस्त्र मलीन रजक जिमि धोवै । उज्ज्वल करै मैलसब खोवै ॥
तिमि तीरथ कालिंजर माहीं । पाप छुटावत संशय नाहीं ॥
कोटि तीर्थ तेहिकाहै नामा । चलि सपरौ मन लहि बिश्रामा ॥
पाप रहित तन परिय लखाई । लक्षण ताके देउं बताई ॥
नीले बस्त्र पहिरकै राजा । नील तुरङ्ग नील सब साजा ॥
दो० हय समेत मज्जन करौ कोटि तीर्थ में जाय ।
धवल बस्त्र पुनि धवल हय तुरतै परी देखाय ॥
सो० यहि बिधिसपरहु जाय कोटितीर्थ महिमा लखौ ।
पातक सकल नशाय अगणित सुख नृपपाइहौ ॥
तब जान्यौ नृप छूटे पापा । मिटिहहिं सकल शोकसंतापा ॥
बिप्रबचन सुनि नृपसुखपावा । तुरतहिंगिरि कालिंजर आवा ॥
कोटितीर्थ तेहि मज्जन कीन्हा । जेहिप्रकार द्विजबरकहिदीन्हा ॥
पहिरि नील पट आयो राजा । सकल स्वेत लखि हर्षसमाजा ॥
नील तुरङ्ग नृपति चढ़िआयौ । हंसबरण लखि बहुसुख पायौ ॥
शुक्लबस्त्र अरु बाजि निहारी । नृपउर भयौ हर्ष अति भारी ॥
पाणि जोरि स्तुति वह भाषी । तीरथ महिमा उरमें राषी ॥
धन्य धन्य कहि गवन्यो राजा । काशी पहुंचेउ सहित समाजा ॥
दो० हेमसुता सुनि और पुनि तीरथ पर्वतमाहिं ।
सरखंभौर पुनीत अति मज्जत पाप नशाहिं ॥
सो० परम रम्य अस्थान बिप्र सुतीक्षण तपकियो ।
तेहि सम क्षेत्र न आन कोटितीर्थ वहिमा मिल्यो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोटि तीर्थ खंभौरहै कैसे । पिता पुत्र सम्बन्धहै जैसे ॥
जोमज्जहिं खंभौरहिं प्राता । कोटि तीर्थ सम फलको दाता ॥
बिप्र सुतीक्षण तपके हेता । कीन्ह बास खंभौर निकेता ॥
अति रमणीय मनोहर ठामा । निरखि ताहिमन लह बिश्रामा ॥
उमा हृदय जनि संशय आनौ । सोता कोटि तीर्थका जानौ ॥
महादेव गिरजा प्रति भाष्यौ । बीचहिं जौन कथा पुनिराख्यौ ॥
अर्द्ध उंचाई परबत माहीं । बास चण्डिका देवी ताहीं ॥
चण्ड मुण्ड दानव बध कीन्हा । गिर कालिंजर बाससो लीन्हा ॥
दो० निश्चय कर बिधि पूर्बक चंडी पूजत जोइ ।
राजपुत्र सुख सम्पदा ताको प्रापति होइ ॥
सो० सुदृढ़ हृदय बिश्वास ध्यावहिं चंडी अंबिका ।
होत शत्रुकी नास भवसागर बिनश्रमतरहिं ॥
सुनहुउमा तुम परमसयानी । अपर कथा मैंकहौं बखानी ॥
बन खंडेश्वर लिंग सरूपा । परम बिशाल मनोहर रूपा ॥
निर्म्मल जल स्नान करावैं । चंदन अक्षत पुष्प चढ़ावैं ॥
बिल्लवपत्र शिव अर्प्पण करहीं । धूप दीप दै चरणन परहीं ॥
पुनि प्रदक्षिणादेहिं सप्रीती । बिन श्रम लेहिं मोहदल जीती ॥
तेहि पीछे नैवेद्य लगावै । शंख घंट अरु डमरु बजावै ॥
शिवशिवशिवरटिशिवहिंरिझावहि । बंबंबं कहि गाल बजावहि ॥
जेनर भक्ति सहित शिव ध्यावहिं । तेसंयुक्त मुक्ति फलपावहिं ॥
दो० दानि शिरोमणि जगत में शंकर परम कृपाल ।
भजौ उमापति नायकहिं बिनयचन्द्रिकालाल ॥
सो० शिव सरहैंजेहिनाम शुचि तड़ागगिरिनिकटहीं ।
शंभुकीन्ह बिश्राम गरल पानकरि प्रथम तहं ॥
तेहिसरचारि दिशाकेमाहीं । सुरअनेकदर्शन अघजाहीं ॥
सरके बिषय बिष्णुको रूपा । पौढ़े शेष कि सेज अनूपा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मंदाचल आकृत तेहि ठामा। सर्प्प बासुकी रजुकर कामा॥
देव दनुज सब गहे भुजङ्गा। ईप्रतिमा सब शिव सर गङ्गा॥
जेनर इनके दर्शन करहीं। तिनके पाप सकल पुनि जरहीं॥
शर्मण विप्र एक अस्थाना। दर्शन को फल करौं बखाना॥
जे फल सोमवती अस्नाना। पूजत सर्मण होत निदाना॥
और सकल तीरथ थल करे। कहं लग बरणौं हवैं घनेरे॥
दो० तीरथ परम पुनीत अति महिमा अगम अपार।
सहस शेष शारद सहित बरणि न पावत पार॥
सो० मैं अति मतिका मंद तेहि यश किमि वर्णन करौं।
मिटत सकल दुख द्वंद गिरि कालिंजर दरशते॥
तीरथ और महातम भारी। पारबती प्रति कह त्रिपुरारी॥
सो संबाद रुचिर अति खासा। विश्वनाथ बरण्यौ कैलासा॥
तस पुनिबरणौं जस बुधिमोरी। सज्जन चतुर न दीजै खोरी॥
जेनर पाप किये संसारा। सपरत गंग होंहि जरि छारा॥
जो पातक गंगा में होई। नाश त्रिबेणी पातक सोई॥
मध्य त्रिबेणी अघ जो लागा। काशी बिषय जाइ सब भागा॥
काशी माहिं पाप जो करई। सो दर्शन कालिंजर जरई॥
पाप कालिंजर करते जोई। बज्र लेप तिनके अघ होई॥
दो० पारबती पति सरल चित जिहपर होहिं दयाल।
तिनके पातक बज्रवत छूटि जाहिं ततकाल॥
सो० शिव सम देव न आन अधम उधारे बहुत जिन।
तिन चरणन में ध्यान निशि बासर करुमूढ़मन॥
जे यह कथा सुनहिं मनलाई। सकल पाप तिनका मिटिजाई॥
धन संतान सकल सुख जेते। ह्वै प्रसन्न गिरिजापति देते॥
जेयह कथा पठन नित करिहैं। अंतकाल शिवलोक सिधरिहैं॥
जे श्रोता नित सुनहिं सप्रेमा। करि बिश्वास भजहिं दृढ़नेमा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कालिंजर महिमा अति पावन। दलन मोहतम शोक नशावन ॥
गिरिजा रमण शंभु अबिनाशी। कहेउ उमापति प्रभु सुखराशी॥
सो सम्बाद बिमल मैं गावा। मति अनुरूप हृदय जस आवा ॥
बिनय चंद्रिकालाल कि सुनऊ। सुनिशुभ कथा हर्षहिय भरऊ॥
दो० कथा संस्कृत में हती पद्म पुराण के माहिं।
देखि ताहि भाषाकरी सुनत सकल भ्रमजाहिं ॥
छं० गिरिजापतिनायकजनसुखदायकचंद्रभालराजतसिरगंगा।
शंकरअबिनाशीघटघटबासीमुण्डमालशोभिततननंगा ॥
औघड़दानीसबजगजानीभस्मचिताधारेनिजअंगा।
शिवदीनदयालाहरहुकसालाकरहुचंद्रिकालालहिचंगा ॥ १॥
करतिरशूलारहुअनुकूलाभूषणधारणकियेभुजंगा।
बिषकोप्यालापियोकृपालाऔरमसालाछनतीभंगा ॥
डमरुबजायोहरिगुणगायोमतेप्रेमरसफिरौमतंगा।
परमकृपालारूपबिशालागिरिजाबामदिशानितसंगा ॥ २ ॥
तुमचरणनमामीबिनवौंस्वामीपूरणकरहुमोरिअभिलाषा।
बसहुकेगामीअंतरयामीआगमनिगमसबैयहभाषा ॥
प्रभुसुखराशीवेदप्रकाशीमुक्तिकोकाशीरचिराखा।
कृपाकरीजयभक्तिकोदीजैचाहौंशंभुयहैरसचाखा ॥ ३ ॥
त्रिपुरहिमान्यौकामहिजान्यौरतिकोदानदियोतुमनाथा।
आसनमृगछालाभेषकरालाजटाजूटसोहतनिजमाथा ॥
दीगम्बरबावाम्बरसोहतकोबरणौतुम्हरेगुणगाथा।
बिनतीसुनिलीजैशिवबरदीजैभणतचंद्रिकालालअनाथा ॥४॥
दो० बामदेव पुरको कहत बांदा जिला सुजान।
तेहि मंडल में परगना प्रथम सिमौनीजान ॥
सो० तेहि समीप ममग्राम योजन अर्द्ध है पश्चिमै।
उत्तम जन बिश्राम कायस्थन टिकुरी रुचिर ॥

6597.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जन्मभूमि बरणौं निज ठामा। माटा ग्राम कहत जेहि नामा॥
अबमैं चरित संत को गाऊं। पंकज युगुल चरण शिर नाऊं॥
भये महात्मा जे मम ग्रामा। तेगदास रहै उनको नामा॥
गद्दी बीरदास की जानौ। गोबिंद दास के शिष्य बखानौ॥
रघुपति चरण प्रेम जिनकीन्हा। त्याग गृहस्थी तृणसमदीन्हा॥
बिमल ज्ञान उपजा उरमाहीं। राम जपतनिशिदिवसबिताहीं॥
गुरुआज्ञा को पाय सिधाये। चारौ धाम दरश करि आये॥
तेहि पश्चात अवधपुर गयऊ। सरयूतट अस्थिर पुनि भयऊ॥
दो० सतराम रसनारटत आसन दियो जमाय।
रंगे प्रेम रंग रामके भजन करहिं हरषाय॥
सो० साहूकार जो एक नगर अयोध्या के बिषे।
तेहिका बिमल बिबेक संतन सेवा नेम नित॥
दिन प्रति त्याग दास पहं जाई। दर्शन करै चरण शिरनाई॥
प्रातकाल नितकर यह नेमा। सेवा संत करहिं सह प्रेमा॥
झार बहार कुटी संतनको। शौचक क्रिया करै पुनि तनकी॥
मरेउ एकदिन तासु कुमारा। बिकल भयो तब साहूकारा॥
तुरतै नौकर को बुलवावा। संतकी सेवा को पठवावा॥
मृतक उठाय मशानहिं लाये। आनि काठपुनि चिता बनाये॥
सेवक साहूकार प्रबीना। त्यागि दास पहं गयो मलीना॥
कह बाबा तुव स्वामिन आवा। केहि कारण नितनेम मिटावा॥
बंदि चरण सेवक तब कहेऊ। नाथ आजु इक अनरथ भयऊ॥
दो० साहूकार के एक सुत अंतकाल भा आज।
लै मरघट ताही गये मृतक क्रिया के काज॥
सो० संत सुना जब हाल मगन ध्यान हरिको सुमिर।
ऐसे दीन दयाल दैगारी बोलत भये॥
मम्मरो वहिका फूंक्यो नाहीं। हवैंप्राण वहि के तन माहीं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोय गयो वह रहेउ बिरामा । भयो अराम लहेउ बिश्रामा ॥
लै बिभूति छोड़ौ मुख जाई । सत्त राम मम कहेउ जगाई ॥
लैबिभूति सेवक उठि धावा । तुरतहि मरघट में पुनि आवा ॥
सब लोगन प्रति कहा पुकारी । थंभौ एक क्षण सुख है भारी ॥
संत बिभूति मृतक मुख डारा । सत्त राम लगि श्रवण पुकारा ॥
मृतक जियो तबहीं ततकाला । धन्यधन्य कहि सबहि कृपाला॥
संतकी कृपा होहि जेहिं ऊपर । नहिं दुर्लभ कछु तेहिं भू ऊपर ॥
देखि सबन मनअचरज कीन्हा । महिमा संत हृदय धरिलीन्हा॥
साहूकार हर्ष उर भयऊ । त्याग दास पहं सब मिलि गयऊ ॥
दो० दंड प्रणाम सबनि मिलि कीन्ह सहित अनुराग ।
द्रव्य बहुत लै दीन धरि सरहत अपनी भाग ॥
सो० हाथ जोरि तब साहु दीन बचन भाषत भयौ ।
प्रभु मैं करौं उछाह देव रजायसु सुत भयौ ॥
सेवा को फल पायों नाथा । मिटी दाह उर भयो सनाथा ॥
मंदिर रुचिर देहुं बनवाई । तामें बास करहु प्रभु आई ॥
निशि दिन सेवा रहउं हजूरी । हिय अभिलाष होत सब पूरी ॥
संतन कृपा द्रव्य बहु मोरे । निशि दिन बढ़ै अनुग्रह तोरे ॥
कछु पठवाइ देव गुरु पाहीं । है कमती मोरे कछु नाहीं ॥
साहूकार बचन जब भाषा । सुनत साधु अतिशय मन माषा ॥
कहेउ संत तब आंख ललाई । हमको फांसौ लोभ दिखाई ॥
आंखिन ओट होहु अब नीके । करहु जाय जो भावत जीके ॥
संत चरण करि दंड प्रणामा । हर्षित गवन कीन निज धामा ॥
दो० नगर अयोध्याके बिषे प्रगट भई यह बात ।
मृतक जियायो संत इक साहूकार को तात ॥
सो० वृंदवृंद नर नारि त्यागदास पहं जाहिं नित ।
संत देहिं बहु गारि पीछा लोग न छोड़हीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे चरित अनेक दिखाये। मुये मशान में दीन जियाये॥
और बांच्छा करजो सेवै। तन सुख बित्त पुत्र प्रभु देवै॥
गोबिन्द दास गुरू तिन केरे। वोऊ नगची रघुपति केरे॥
ग्राम गुगौली में अस्थाना। है परगन पैलानी थाना॥
ज्ञान दृष्टि से लख्यो तमाशा। त्यागदास कर चरित प्रकाशा॥
गुरू बिचार कीन मन माहीं। हरि बिनऔर कोऊ जगनाहीं॥
गुरुके हिये बात जो आई। त्यागदास को दियो लखाई॥
स्वप्नदिखाय बहुत पुनिडाटा। भग्यो अवध तजि सरयू घाटा॥
दो० कृपासिंधु नर रूप हरि गुरु नारायण देव।
मोसन कछु नहिं बन परा जान गये सब भेव॥
सो० नेक न पाऊं थाह भव सागर पैरत रहौं।
मोहिं बतायो राह करी कृपा गुरुदेव प्रभु॥
शीघ्रहिंग्राम गुगौली आये। गुरुके चरण शीश पुनि नाये॥
देखि गुरू तब बचन प्रकाशा। भये रामते नहिं हरि दाशा॥
आपन चहसि महत्व बढ़ावा। राम रजायसु को बहलावा॥
मृत्युकाल सुख दुख जगमाहा। बिन हरि आयसु होतेनाहीं॥
रामदास हुय राम रजाई। मेटत अनुचित परै दिखाई॥
राम भजन को मुंड मुड़ायो। त्याग गृहस्थी घर सब आयो॥
मेटि रजायसु रघुकुल केतू। प्रभुता करी पुजावन हेतू॥
अब जिन ऐसे भर्म्म भुलाहू। समय चूकि पीछे पछिताहू॥
दो० गोबिन्ददास केबचन सुनि पाणिजोरि शिरनाय।
नीक सिखापन दीन्हमोहिं स्वामी भयो सहाय॥
सो० जग नहिं दूसर आन कृपा सिंधु महिमालखे।
हरि इच्छा बलवान अस समर्थ को मेटई॥
मैं तव चरण धरि परसादा। लहेउं सकलसुखमिटा बिषादा॥
अबमोहिंनाथकहौ जहंरहऊं। केवल स्वामि रजायसु चहऊं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कायिकवाचिकमांसिकस्वामी । मोहिं जानि आपन अनुगामी ॥
त्यागदास बिनतीजबकीन्हा । चित प्रसन्न गुरु आयसुदीन्हा ॥
जसई पुर माटा जो ग्रामा । तहां बैठि सुमिरौं हरि नामा ॥
गुरु अनुशासन शीशमें राखा । गुरुसे बिनय बहुत पुनिभाषा ॥
दंड प्रणाम गुरूको कीन्हा । माटा ग्राम बास तब लीन्हा ॥
पुर प्राची दिशि एक तड़ागा । बिशद बिटप बट सुंदर जागा ॥
आसन कीन्ह संत बट छाहीं । भजनकरतनिशिदिवशसिराहीं ॥
दो० राम राम रसना रटत मगन रहत यहि ध्यान ।
जो आवत अस्थान में ताको सिखवत ज्ञान ॥
सो० लागेउ मास अषाढ़ माटा मेघन बरषहीं ।
सबहिं परयो अतिगाढ़ जहं तहंनरसब शोचहीं ॥
मिलि दश पांच संत पहं गयऊ । बाबासे अस भाषत भयऊ ॥
उगि आई चौगिर्द सिपारी । हमरे ग्राम न बरषहिं बारी ॥
देव बताय सो करिय उपाई । ग्रामके लोग सकल अकुलाई ॥
रामहिं ध्यान मगन उर माहीं । आसन बट तर मंदिर ताहीं ॥
सबमिलि करहुएक तुमकामा । बरषैं मेघ तुम्हारे ग्रामा ॥
दिनभर में मम कुटी बनाओ । जो चाहौ पानी बरसाओ ॥
सब लोगन मिलि कीन्हबिचारा । एकदिवश किमिबनैअगारा ॥
एकन कहा सुनौ सब भाई । संत सदन काल्है बनिजाई ॥
यह जनि ऐसे भर्म्म भुलाहू । साधु बचन फुरकरसियनाहू ॥
दो० होत भोर सब ग्रामके लोग सिमिट गे आइ ।
कुटी बनावन लागि सब अचरजपर्योलखाइ ॥
सो० हस्त उंचाई चार तुरत भीत ठाढ़ी भई ॥
महिमा संत अपार गील भीत छावन कहेउ ॥
अस्त दिवश लग घर बन गयऊ । बाबा सबको आयसु दयऊ ॥
जाहु घरै अब करहु बियारी । छांड़ौ संशय है जल भारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग्रामके लोग सबै घर गये। घन घमंड बरसत पुनिभये॥
आनन्द मगन भये सब लोगा। निरखतनीरमिटा सबसोगा॥
संत कि महिमा सब कोउ जाना। धन्यनि भाग अपनकोमाना॥
जैसे चरित अवध पुर कीन्हा। मृतवजिआय यहू पुनिदीन्हा॥
द्विज तुलसी यक छोड़े प्राना। ताहिजिआयो कृपा निधाना॥
ऐसे अचरज किये अपारा। संत राम हरि नाम उचारा॥
सेली मुकुट पितांबर बाना। कान कुण्डल तेज निधाना॥
महिमा उनकी बरणि न पाऊं। युगुल चरणमें शीश नवाऊं॥
दो० परमदास तिनके भये चेला पा सुजान।
रामभजनमें प्रीतिअति करत निरंतर गान॥
सो० सांवलदास सुनाम परमदासकेशिष्यजो।
प्रेम सहित बसुयाम राम राम भेतरहे॥
भजनानंद शिष्य तिनकेरे। बिद्यम राजत वहि खेरे॥
नाम नरायण दास बिशाला। सबसोषत बचन रसाला॥
कुटी संतकी जो कोउ जावै। प्रेम रत तिनको बैठावै॥
गावत भजन नीक हरि केरे। नित्त यह सांझ सबेरे॥
राम चरित जे भाषा माहीं। रामायआदिक जे आहीं॥
बांचत मधुर गिरा तिन काहां। सुनि सुजोग हिये हर्षाहीं॥
द्विज इक पलटू रामजो प्रेमी। औरस पुरके जे नेमी॥
हरि लीला सब संतके संगा। कहहिं सुजसहो परसंगा॥
कबहूं अवसर पाइकै जाऊं। संतसे अ बिनय सुनाऊं॥
अति कोमल स्वभाव चितसन्ता। बर्णन को करहिंतुरन्ता॥
अब अपना वृत्तांत सुनाऊं। दादा बो नाम बताऊं॥
दो० श्रीबास्तव कायस्थ कुल में शिवचरधान।
युगुल तनय तिनके भये बेउंजा ग्यान॥
सो० धरम चंद रह नाम जेठ पुत्र तेहिं भये।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुमिरत सीता राम उपत जपत सुरलोकगे ॥
तासु तनय मातापरसदा । मोपर कृपा करतहैं ज्यादा ॥
धरम चन्द लघु भ्राता जोई । देबीदीन कहत सब कोई ॥
ते मम पिता जानियो भई । अल्पहि काल मृत्यु उन पाई ॥
तब मैं तीन बर्ष का रहऊं निशि बासर नित भोजन चहऊं ॥
धरमचन्दके धरम अपार । पालि हमैं यश लह संसारा ॥
दुरा भाव कबहूं नहिं कीन्हा । बिद्या पढ़नको आयसु दीन्हा ॥
बर्ष एक काशीकर बास । बिश्वनाथ दर्शन अघ नासा ॥
सरकारी चटशाला मा । पढ़ बिद्या आयों घरकाहीं ॥
ग्राम लुक्राकी चटशाल । पाइ मुदर्सी भयों निहाला ॥
दो० मास बर्ष तेहि ग्र में पायों सुख बिश्राम ।
पुनि बदली मेरीई क्षेत्र कलिंजर धाम ॥
सो० उदयभयो जियनि पूर्बजन्मका पुण्यकछु ।
यह मनमें अनुन नीलकंठ दरशन करूं ॥
पुनिकालिंजर तभयऊं । गढ़केसकलतीरथनगयऊं ॥
नगर बिचित्र मनोहरखा । धन्य भाग्य अपनीको लेखा ॥
द्विज संपूरण नगर केसी । शुभ गुण मन्दिर तेजके रासी ॥
कथा ललित अति पश्राना । कह्यो पताल खण्डजगजाना ॥
हवै महातम क्षेत्रजामें । सुनत सकल अघ जाते क्षणमें ॥
पण्डित सकल कलिंमाहीं । कहैं महातम यात्रिन पाहीं ॥
मोहूं सुन्यों कथा आवन । त्रिबिधिताप भवशोक नशावन ॥
उर अभिलाष भई मोरे । किमि भाषा होवै बुधि थोरे ॥
दो० कालिंजर प पुरी ऊखल क्षेत्र महान ।
जोलखि पार्थ कछु भाषा करौं बखान ॥
सो० शंकर परमल बिनती तिनसों कीन्हमैं ।
भइबदली ल माह सताइस बास कर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कालिंदी तट मऊ जो ग्रामा। परगन छीबोंको सुखधामा ॥
तहां अन्न जल हमको लायो। मज्जत यमुनाको सुख पायो ॥
महिमा कालिंजर उर माहीं। बसी रहै उर बिसरत नाहीं ॥
द्विज एक भूरे श्रवा जो नामा। जन्म भूमि कालिंजर धामा ॥
पण्डित साक्षर परम सुजाना। रहै मुदर्रिस यहिअस्थाना ॥
अर्थ महातम के उन कीन्हा। लिखकर चीठा हमको दीन्हा ॥
ताको पद्य कीन्ह मैं भाई। रचि दोहा सोरठ चौपाई ॥
अल्पबुद्धि शिव चरित अपारा। कछुक कहेउं मतिके अनुसारा ॥

दो० बक्ता श्रोता चतुर तुम मैं हौं अबुध अजान।
समुझिबूझिनहिंकहबकछु भनितदोषजियजान ॥
सो० पिङ्गल पढ़ी मैं नाहिं छंद भेद नहिं जानहूं।
राम सुमिरि उर माहिं शिव चरित्र भाषा करौं ॥

दो० उभय नाम आधीन के कहत लोग इहि काल।
कोउ चन्दी परसाद पुनि कोऊ चन्द्रिकालाल ॥
पोथी भई समाप्त यह कृष्णपक्ष मधुमास।
सातैं तिथि मङ्गल दिवश ऋतुबसंत परगास ॥
बनइस शतअरतिसअधिक संव्वत् लेव बिचार।
चूक भूल बहुतैं कियों सज्जन लेव सुधार ॥

इति।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]
॥ [illegible] । [illegible]

। [illegible] ॥ [illegible]
॥ [illegible]
। [illegible] ॥ [illegible]
॥ [illegible]

। [illegible] ॥ [illegible]
॥ [illegible]
। [illegible]
॥ [illegible]
। [illegible]
॥ [illegible]

। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| सतीविलास | कथाश्रीगंगाजी | गणितकामधेनु | जातकालंकार |
| राग | अवधयात्रा | लीलावती | दैवज्ञाभरण |
| राग प्रकाश | भरतरीगीत | पटवारियों की पुस्तक | ज्ञानस्वरोदय |
| लावनी | दानलीलावनागलीला | चार भाग | रमलसार |
| क़िस्सह वग़ैरह | दोहावलीरत्नावली | संस्कृत की पुस्तकें | इन्द्रजाल |
| इन्द्रसभा | गोकर्णमाहात्म्य | लघुकौमुदी | संस्कृतउर्दूटी॰स॰ |
| विक्रमविलास | श्रीगोपालसहस्रनाम | सिद्धान्तचन्द्रिका | मनुस्मृति |
| बैताल पच्चीसी | कथासत्यनारायणस॰ | अमरकोषतीनोंकां॰स॰ | विष्णुहारीत |
| सिंहासन बत्तीसी | हनुमान बाहुक | पंचमहायज्ञ | महिम्नस्तोत्र |
| पद्मावतीखण्ड | जनक पच्चीसी | निर्णयसिन्धु | याज्ञवल्क्यस्मृति |
| शुकबहत्तरी | हरिहरसगुणनिर्गुण | संग्रहशिरोमणि | व्रतार्क |
| वकावलीसुमन | पदावली | भगवद्गीतासटीक | संस्कृत भाषाटी॰ |
| चहार दरवेश | बनयात्रा | दुर्गापाठमूलवसटीक | अमरकोष |
| क़िस्सा हातमताई | कायस्थवर्णनिरूपण | विष्णुभागवत | याज्ञवल्क्यस्मृति |
| सौदागरलीला | बिहारबिंद्राबन | यमद्वितीयाकीकथा | व्रतार्क |
| अपूर्वकथा | समरबिहारबिंद्राबन | अपराधभंजनस्तोत्र | सन्ध्यापद्धति |
| क़िस्सा गुलसनोबर | कल्पभाष्य | कायस्थकुलभास्कर | भगवद्गीताटी॰ह॰बं॰ |
| सहस्ररजनी चरित्र | लिंगपुराण | कायस्थधर्म्मनिरूपण | भगवद्गीताटी॰आ॰गि॰ |
| राबिन्सन्काइतिहास | विष्णुपुराण | तथा छोटा | गीतगोविन्द |
| श्रीमदुमापतिदिग्वि॰ | ब्रह्मोत्तरखंड | मथुरासभा | कथासत्यनारायण |
| वैद्यकभाषा | रामकलेवा | ज्योतिष | परमार्थसार |
| निघण्ट | शिवसिंहसरोज | मुहूर्त्तगणपति | शार्ङ्गधरसंहिता |
| अमरविनोद | देवीभागवत | मुहूर्त्तचक्रदीपिका | पाराशरीसटीक |
| वैद्यजीवन | गरुड़पुराणप्रेतकल्प | मुहूर्त्तचिन्तामणिस॰ | शीघ्रबोधसटीक |
| औषधिसंग्रहकल्प॰ | दरसी | मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स॰ | लघुजातक |
| वल्ली | अक्षरावली | मुहूर्त्तदीपक | षट्पंचाशिका |
| अमृतसागरबड़ावछो॰ | स्वयम्बोध | बृहज्जातकसटीक | सामुद्रिक |
| वैद्यमनोत्सव | ज्ञानचालीसी | जातकालंकार स॰ | तुलसीतत्वभास्कर |
| मुतफ़र्क़ात | दोहावली | जातकाभरण | सांख्यतत्वकौमुदी |
| शनिश्चरकीकथा | बालाबोध | होरामकरंद | मार्कण्डेयपुराण |
| ज्ञानमाला | विद्यार्थीकीप्रथमपु॰ | भाषाज्योतिष | कैवल्यकल्पद्रुम |
| गोपीचंदभरतरी | किताबजंत्री | जातकचन्द्रिका | रामव्याहोत्सव |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| सरिश्ते तालीमकी | भाषातत्त्वदीपिका | सुन्दरकांड | ऐक्ट स्टाम्प अदालत |
| पुस्तकें | भाषाचन्द्रोदय | लंकाकांड | २६ सन् १८६७ ई० |
| संस्कृत | भूगोलदर्प्पण | उत्तरकांड | मजमूआ ऐक्ट अव- |
| ऋजुपाठ १भा | भूगोलतत्व | गुटका १ भाग | ध लगान १९ सन् |
| तथा २ व ३ भाग | इतिहासतिमिरनाश | तथा २ व ३ भाग | १८६८ ई० पुरस्ता- |
| धात्वर्णव | क १भा० व २ व ३भा | हिदायत नामा सुद- | दारी २६ सन् १८६६ |
| नागरी व कैथी | अवधदेशीय भूगोल | रिसान् | ई० वग़ैरह |
| वर्णमाला १भाग | इंग्लिस्तान का इतिहा | पशु चिकित्सा | ऐक्ट स्टाम्प दस्तावे- |
| तथा २ | भारतवर्षीय इतिहास | पट्टा बख़्त कैथी | ज़ात सन् १८६९ ई० |
| पत्रमाला कैथी | हितोपत्रिका | तथा कबूलियत | ऐक्ट ताल्लुक़ दारा- |
| पत्रहितैषिणी कैथी | बालाभूषण | रजिस्टर दाख़िल ख़ा | न् मक़रूज़ अवध |
| तथा कैथी फ़ारसी | पद्य संग्रह | रिज तुलवा मदर्सा | २४ सन् १८७० ई० |
| नागरी | भाषाकाव्यसंग्रह | रजिस्टर हाज़िरी पा- | ऐक्ट चौपायों का म- |
| हरूफ़ सुफ़र्दात | कवित्तरत्नाकर १भा | ठशाला | दाख़लत बेजा १ |
| अक्षरारम्भ | तथा २ भाग | क़ानून कैथी | सन् १८७७ ई० |
| वर्णप्रकाशिका १भा | मंगलकोष | पटवारियों के क़ायदे | ऐक्ट मजमूआ ज़ा- |
| तथा २ भाग | अंकप्रकाश | उर्दू कैथी महाजनी | बिता फ़ौजदारी १० |
| सूरजपुर की कहानी | गणितप्रकाश १भा | टिकट के लाइसन्स | सन् १८७२ ई० |
| धर्म्मसिंह का वृत्तांत | तथा २भा० व ३ व ४ | का ऐक्ट २ सन् १८७८ | ऐक्ट मालगुज़ारी- |
| शिक्षावली | गणितक्रिया | ईसवी | मग़रबी व शिमाली |
| शिशुबोध | क्षेत्रप्रकाश | नागरी | १९ सन् १८७३ ई० |
| पत्रहितैषिणी ना- | क्षेत्रचन्द्रिका २भाग | ऐक्ट लगान मगरबी | तरमीम मजरूआ |
| पत्रदीपिका | सकील दायरा | व शिमाली १० सन् | ज़ाबिता फ़ौजदारी |
| विद्याचक्र | रेखागणित १भाग | १८५९ ई० | ११ सन् १८७४ ई० |
| विद्यांकुर | तथा २ भाग | इण्डियन पिनल- | तक़ावी के क़ायदे |
| पदार्थविद्यासार | वीजगणित १भाग | कोर्ट मजमूआ ज़ाबि | सवाल जवाब पु- |
| पदार्थज्ञानविटप | तथा २भाग | ता फ़ौजदारी ऐक्ट २५ | लिस |
| भोजप्रबन्धसार | रामायण तुलसीकृ- | सन् १८६१ ई० | अवध रुहेलखंड |
| राजनीति | बालकांड | ऐक्ट स्टाम्प १ सन् | रेलवे का दस्तूरुल् |
| भाषालघुव्याकरण | अयोध्याकांड | १८६२ ई० | अमल |
| १ भाग | आरण्यकांड | ऐक्ट रजिस्टरी २० | इति |
| तथा २ भाग | किष्किन्धाकांड | सन् १८६६ ई० | |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri